

नवजात शिशुओं में स्तनपान का अवलोकन

टेकअवे 4



सुमित्रा के गाँव में कल दो बच्चों का जन्म हुआ। सुजाता बुआ की बहु और संजीव चाचा की बिटिया का। सुमित्रा को जैसे ही सुबह खबर मिली वह तुरंत उनसे मिलने निकल पड़ी।



मुबारक हो मीना! तुम ठीक तो हो ना?

मैं ठीक हूँ, बस मुन्नी की चिंता है।



ठीक है दीदी।

चिंता की कोई बात नहीं। जरा मुझे अस्पताल से मिले सारे कागज़ दिखाओ और फिर मेरे सामने मुन्नी को दूध पिलाओ।

अरे वाह! तुम्हारी मुन्नी तो पूरी ताकत से दूध पी रही है, बस इसी तरह मुन्नी को अपना दूध 6 महीने तक पिलाती रहो। वह स्वस्थ रहेगी। याद रखना, अपने दूध के अलावा उसे कुछ मत देना... पानी भी नहीं।



फिर सुमित्रा संजीव की बिटिया को देखने गयी। संजीव चाचा ने बताया कि अचानक कल रात को दर्द उठने के कारण पास वाली दाई से घर पर ही प्रसव करा लिया। लड़का हुआ है।



वह अंदर के कमरे में उसकी बिटिया को देखने गयी।

मुबारक हो रुपा! कैसा है तुम्हारा बेटा?

बहुत सुंदर है पर थोड़ा सुस्त है।



क्या यह पूरी ताकत से स्तन चूस रहा है?

मुझे नहीं लगता। मुझे ऐसा लगता है कि यह थक के सो जाता है, इसलिये पेट नहीं भरता।

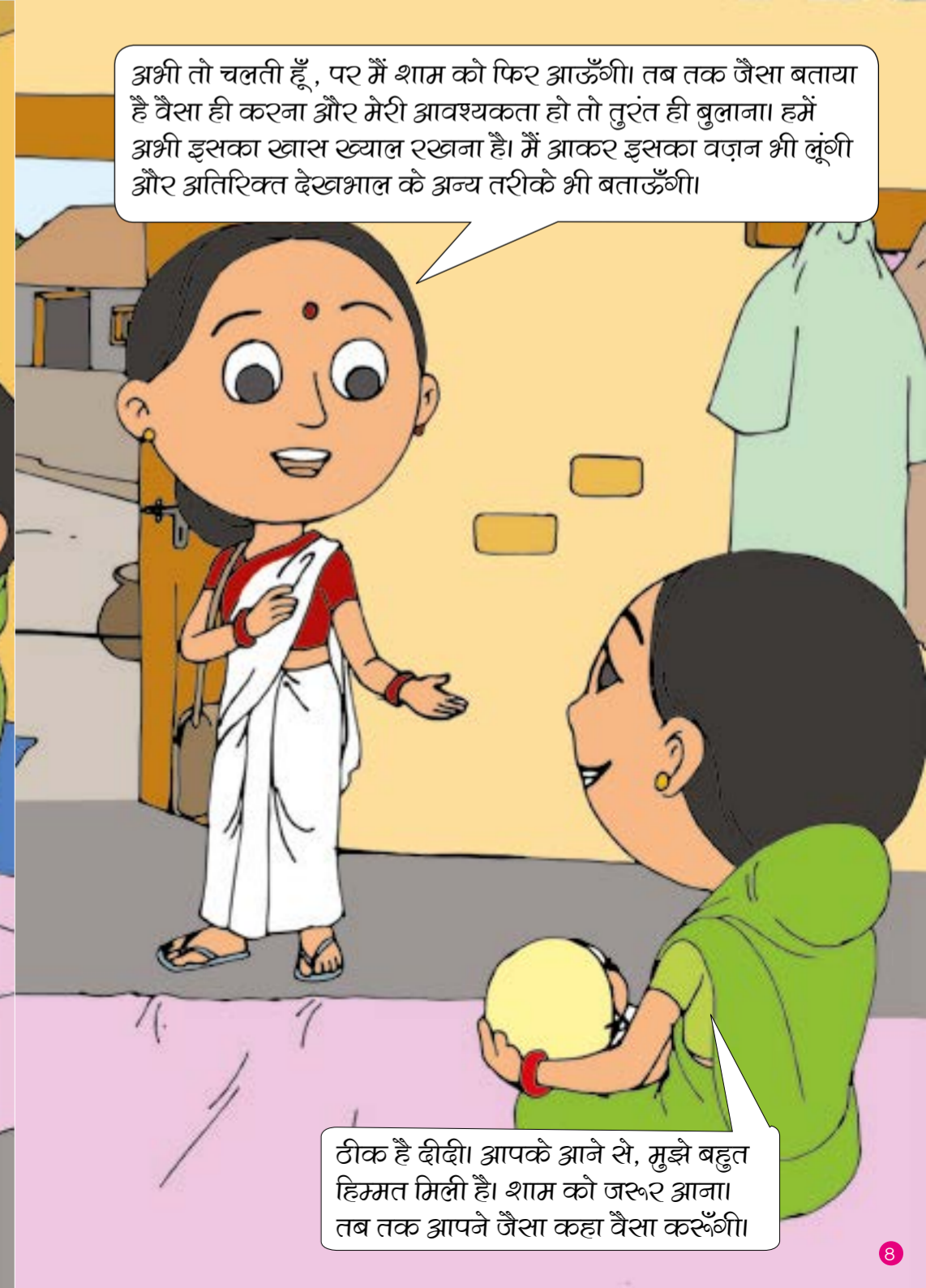
क्या तुम इसे मेरे सामने दूध पिला सकती हो?



रुपा बच्चे को दूध पिलाने लगती है। सुमित्रा बहुत ध्यान से अवलोकन करती है और उसे समझ में आ जाता है कि रुपा का बच्चा कमजोर होने के कारण स्तनपान सही से नहीं कर पा रहा है। वह बीच-बीच में सो जाता है और पूरी ताकत से चूस भी नहीं पा रहा।



रुपा, तुम्हारे मुन्ने को बहुत देखभाल की आवश्यकता है। वह स्तनपान अच्छे से नहीं कर पा रहा है। मैंने देखा कि वह स्तन का काला भाग पूरी तरह से मुँह में नहीं ले पा रहा है और वह पूरी ताकत लगा के भी स्तनपान पूर्णतः नहीं कर पा रहा है जिससे उसका पेट नहीं भर रहा। तुम उसे थोड़े-थोड़े समय बाद, हर घंटे या उससे कम में उठाकर दूध पिलाती रहना। वह थक के दूध पीते-पीते सो रहा है, ध्यान देना, यदि उठाने पर न उठे तो उसे जल्दी ही अस्पताल ले जाना पड़ेगा।



अभी तो चलती हूँ, पर मैं शाम को फिर आऊँगी। तब तक जैसा बताया है वैसा ही करना और मेरी आवश्यकता हो तो तुरंत ही बुलाना। हमें अभी इसका खास ख्याल रखना है। मैं आकर इसका वज़न भी लूँगी और अतिरिक्त देखभाल के अन्य तरीके भी बताऊँगी।

ठीक है दीदी। आपके आने से, मुझे बहुत हिम्मत मिली है। शाम को जरूर आना। तब तक आपने जैसा कहा वैसा करूँगी।

जन्म के तुरंत बाद स्तनपान का अवलोकन कैसे करना है?

जन्म के तुरंत बाद शिशु के घर जाकर अपने सामने माँ को स्तनपान कराने का अनुरोध करें और देखें—



1 स्तनपान कराते समय क्या माँ आराम से बैठी है या लेटी है?



2 क्या शिशु के शरीर को अच्छी तरह से पूरा सहारा मिल रहा है?



3 क्या शिशु का सिर थोड़ा सा पीछे की ओर झुका है?

4 क्या स्तन का काला/भूरा हिस्सा पूरी तरह बच्चे के मुँह में है? क्या बच्चा स्तन से लगातार दूध चूस रहा है?

5 स्तनपान करते समय शिशु सो तो नहीं रहा है?

हमें स्तनपान का अवलोकन कब करना चाहिए?



अस्पताल में जन्मे शिशुओं का अवलोकन या तो अस्पताल में या उनके घर आने के 24 घंटे के अंदर करना चाहिए।

घर पर जन्मे शिशुओं का अवलोकन जन्म के तुरंत बाद या 24 घंटे के अंदर करना चाहिए।



घर पर शिशु के बीमार पड़ने का पता चलते ही तुरंत अवलोकन करना चाहिए।

स्तनपान से कमजोर शिशु को कैसे पहचानें?

- यदि शिशु कमजोर है तो वह स्तन का काला भाग पूरी तरह से मुँह में लेने में सक्षम नहीं होता है।
- कमजोर शिशु कम चूसेगा और फिर निगलने के लिए या स्वयं को आराम देने के लिए कुछ देर तक चूसना बंद कर देगा।
- एक कमजोर शिशु धीरे-धीरे स्तनपान करेगा, स्तनपान करने में ज्यादा समय लेगा व बार-बार सो जाएगा। उसे बार-बार जगाने की ज़रूरत पड़ेगी। शिशु एक बार में एक स्तन का दूध भी पूरा नहीं पी पायेगा। लेकिन ऐसे शिशु को अपेक्षाकृत ज़्यादा बार स्तनपान करवाने की ज़रूरत होती है। हर घंटे में या उससे भी कम समय के अन्तराल पर बार-बार।



खेल-खेल में अन्तर पहचानो

तीनों चित्रों को ध्यान से देखें और तीनों में अंतर पहचानें। अवलोकन कर बतायें कौन सा शिशु ठीक से स्तन चूस रहा है।



क



ख



ग

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता क्या करें?

1 जन्म के दिन (संस्थागत जन्म) स्तनपान का अवलोकन करना

- अस्पताल में प्रसव के बाद घर वापस आने के एक दिन के अंदर नवजात शिशु की माता से भेंट करें।
- पता करें कि अस्पताल में परिवार को किसी भी तरह की विशेष देखभाल की सलाह दी गयी है या नहीं और अस्पताल के कागज़ पर शिशु का वज़न देखें।
- माँ से आग्रह करें कि वह हमारे सामने अपने शिशु को स्तनपान करायेँ और स्तनपान का अवलोकन करें।

2 जन्म के दिन (घर पर प्रसव) स्तनपान का अवलोकन करना

- घर पर प्रसव होने की स्थिति में हम जितनी जल्दी हो सके पहले दिन ही नवजात शिशु के घर पर माता से भेंट करें और स्तनपान का अवलोकन करें।
- यदि संभव हो तो शिशु का वज़न माप लें, जन्म के समय उपस्थित रहें और एक घंटे के अंदर स्तनपान शुरू कराएं।



3 शिशु के बीमार पड़ जाने पर स्तनपान का अवलोकन करना

- जब भी पता चले कि शिशु बीमार है तो उसके यहां जल्द से जल्द गृह भेंट करें।
- माँ से आग्रह करें कि वह हमारे सामने शिशु को स्तनपान कराएं और स्तनपान का अवलोकन करें।
- यदि शिशु आवश्यकतानुसार ताकत से स्तनपान नहीं कर रहा है तो हम परिवार को तुरंत अस्पताल जाने की सलाह दें।

